Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 8 | ISSUE : 8 | AUGUST 2022

# प्रादेशिक उत्तर- आधुनिकतावाद: अब्बास बाटलीवाला

**डॉ. दीपक कुमार भट्ट** [1]

[1] **सहायक प्रोफेसर (पेंटिंग विभाग) सीवीएम कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, सीवीएम विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्या नगर, आनंद, गुजरात**

## ABSTRACT:

आधुनिक कला में चित्रण की स्वतंत्रता ने कलाकारों को रचनात्मक संमसार को संजोने में अहम भूमिका निभाई है। वैश्विक कला आन्दोलनो के बाद आज समसामयिक कला पुरातन स्वरूप को छोड़, नवीन प्रयोगात्मक कार्य करने में व्यस्त है। आधुनिक कला में स्वतंत्र रूप से कार्य करने की प्रेरणा ने कलाकारों के लिये असीम संभावनाए सृजित की है।। राजस्थान उदयपुर के चित्रकार अब्बास बाटलीवाला ने आधुनिक कला को आत्मसात करते हुए अपनी कल्पनाशील मौलिकता से उन्होंने, दैनिक जीवन से अपने आस-पास के वातावरण, रोज़मर्रा की गतिविधियों,गली मौहल्लों, परम्परागत रहन-सहन को विषय वस्तु बनाकर, अपनी कलाकृतियो से सभी को चमत्कृत कर दिया। उदयपुर शहर के समीप ही एक गांव मौलेला की लोककला से प्रभावित होकर उन्होंने अपनी कला में नवीन रूपक व ऐंठनदार आकृतियों का समावेश किय। जैसे बड़ी-बड़ी आंखें, टेढ़े-मेढ़े आकार, टेक्चर, तथा सामाजिक कटाक्ष के साथ-साथ कुछ हास्य पुट को जोड़ने से वे नहीं चुके, कालांतर में यही अब्बास बाटलीवाला की निजी चित्रशैली की पहचान बने।

## KEYWORDS:

**मोलेला, उत्तर प्रभाववाद, कठपुतली, उदयपुर, मेवाड़ बायोस्कोप, ब्रश, रंग, केनवास पतंग खिड़की, अभिव्यंजना**

**मूल आलेख –**

अरावली की पहाड़ियों से आच्छादित राजस्थान का उदयपुर शहर पर्यटन के लिये प्रसिद्ध है। वहीं उदयपुर मेवाड़ राजघराना कला का भी प्रमुख केन्द्र रहा है। मेवाड़ की लघु चित्र शैली विश्वविख्यात रही है। मेवाड़ में जहां परंपरागत कला का बोलबाला था वहीं आज आधुनिक चित्रकारो की एक बड़ी फेहरिस्त यहां पायी जाती हैं।

1958 में उदयपुर में एक सम्पन्न परिवार में जन्मे अब्बास बाटलीवाला जिनके अन्तर्मन में जन्मी ऐसी अभिव्यंजना जिसने आधुनिक चित्रकला परिदृश्य को एक नवीन आयाम प्रदान किया। 1982 में अपनी विधिवत कलाशिक्षा पूर्ण कर यह कलाकार असीम सम्भावनाओ के साथ रंग व ब्रश लेकर केनवास के साथ एकरुप हुआ। अब्बास बाटलीवाला के चित्र विषय कोई नवीन विषय नहीं है उन्होंने अपने आसपास की दुनिया को अपनी आंखों से देखा, परखा और समस्त परम्परागत नियमों को तोड़कर मौलिक सृजन के लिए गली के नुक्कड़, उदयपुर की गालिया, पुरानी दीवारें, पतंग, मोलेला की मूर्तियां अदि को विषय वस्तु बनाया। उनकी अपनी विशिष्ट शैली है जिनमें उनके द्वारा रचित समस्त पात्रों की आंखें बड़ी-चौड़ी, अनोखे ढंग से बनी है जो पूरे चित्र में सबसे ज्यादा ध्यान आकर्षित करती है। उनके विषयों में प्रमुख रुप से रोज़मर्रा के दैनिक कार्यकलापों के साथ, पुरानी दीवारें, खिड़कियां, पतंग, ग्रामीण प्रेमी, कठपुतलियों का खेल, गणेश, मोलेला की मूर्तियां, देवी दुर्गा आदि। अपनी विशिष्ट शैली से वे इन किरदारों में यदा-कदा हास्य को भी जोड़ते है जैसे चींटी का हाथी से बड़े हो जाना, एक युवा मेढक जैसी पोषक पहने उसके जैसा अभिनय कर रहा है।

आधुनिकवाद ने विषयों एवं कार्य शैली को स्वतंत्रता तो दी लेकिन पुरातन चित्रण पद्धति का विरोध भी किया। युरोप के कला आन्दोलन भी इस दिशा में कार्यरत थे। विशेषकर स्थापत्य कला में बड़े प्रयोग हुए। उत्तर-आधुनिकतावाद की शुरुआत स्थापत्य कला के अभिनव प्रयोगों के बाद से प्रारंभ हुई। पश्चिमी कलाकारों ने इस प्रभाव को चित्रण में भी बखूबी प्रयोग किया। भारत में आजादी के बाद प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप के कलाकारों ने नवीनतम प्रयोग किये जिसका प्रभाव हुसैन की कला में देखने को मिला। इसी क्रम में बड़ौदा के गुलाम शेख, भूपेन खक्खर ने जहां लघु चित्रण शैलियों से प्रेरित होकर कार्य करना प्रारंभ किया और उत्तर-आधुनिकवाद में अपनी विशिष्ट पहचान दर्ज की।

राजस्थान के कलाकार अब्बास बाटलीवाला इस दिशा में आधुनिक चित्रण पद्धति को अपनाते हुए विषयों के चयन में अपना विशेष प्रभुत्व रखते हैं, वे अपने आस-पास के गली - मौहल्लो में दैनिक जीवन के क्रिया कलापों को उकेरने लगे। वस्तुतः दैनिक जीवन व अपनी व्यवसायिक प्रतिष्ठान पर आने वाले बच्चों से लेकर बुढ़े व्यक्तियों के साथ मोलभाव करते तथा व्यवहार को उन्होंने बखूबी आत्मसात किया और उन्हें अपनी चित्र भाषा में प्रस्तुत किया। उदयपुर शहर से नजदीक एक छोटा सा मौलेला गांव है, जहां पारंपरिक टेराकोटा से मूर्तियां व खिलौने बनाने कार्य किया जाता है। मौलेला की मूर्ति कला से प्रभावित होकर अब्बास भाई ने अपनी चित्राकृतियों में नवीन प्रयोग किये। उनकी कार्यशैली मौलेला के लोक चित्रण से प्रभावित है। जिसमें बड़ी चौड़ी आंखें, टेक्चर तथा सामाजिक कटाक्ष के साथ हास्य-पुट, अब्बास बाटलीवाला की निजी चित्रण के मूलाधार बने। उनके बने प्रमुख चित्रों में डांगी विथ कंप्यूटर-- इस पेंटिंग में एक अधेड़ अपने ग्रामीण पहनावे के साथ अपने कमरे में एक आधुनिक कम्प्यूटर सेट के सामने बैठा है- बडे अचरज भाव से वह ग्रामीण (डांगी) सहज रुप से अपना बीड़ी का बंडल व माचिस कम्प्यूटर के उपर रख देता है। पार्श्व में अनाज की खाली बोरियों का पर्दा, बायीं तरफ़ छोटी खिड़की, पुराना छाता, अंधेरे कमरे के माहौल में चमकता लाल पीला बिजली का तार, सभी कुछ ऐसा की दर्शक देखता रह जाये

दुर्गा --- चित्र में मौलेला के टेराकोटा में बनी मूर्ति का चित्रण आकर्षित करता है। तेल रंग में गहरी पार्श्व भूमिका में चटख लाल पीले रंगों की मौली से लटकता आस्था का प्रतीक लटकते धागे, नारियल, यथार्थ चित्रण -- एक आधुनिक कलाकार ने देशज विषय वस्तु को जिस यथार्थ रुप से अंकित किया है वह निःसंदेह कलाकार की आत्मिक अभिव्यंजना की पराकष्ठा है।

अन्य विषय -कठपुतली के खेल, फल विक्रेता, दुर्गा , बायोस्कॉप, बॉय ऑन ट्राइसाइकिल, ब्रोकन चेयर, गोलगप्पा।

आज भी अब्बास भाई अपनी दिनचर्या में पारिवारिक व्यवसाय को निभाते हुए सृजन में व्यस्त है कला जगत के सबसे प्रतिष्ठित त्रिनाले पुरुस्कार से सम्मानित अब्बास बाटलीवाला की कला अत्यंत रोमांचक एवं मन को आनंदित करने वाली है निसंदेह उनकी कला शैली आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा देती रहेगी।

1

2

**चित्र सूचि: 1- डांगी विथ कंप्यूटर 2- कठपुतली के खेल**

## REFERENCES